नईदुनिया

अमेरिका में 24 घंटे में दूसरा विमान हादसा

फ्लोरिडा में छोटा विमान दुर्घटनाग्रस्त, तीन लोगों की मौत

वाशिंगटन

अमेरिका में 24 घंटे के अंदर दूसरा विमान हादसा हुआ है। न्यूयॉर्क के बाद फ्लोरिडा में एक छोटे विमान (सेसना 310 आर) के दुर्घटनाग्रस्त होने से उसमें सवार सभी तीन लोगों की मौत हो गई। न्यूयॉर्क के विमान हादसे में छह लोगों की मौत हो गई थी। स्थानीय अधिकारियों और अमेरिका संघीय उड्डयन प्रशासन के अनुसार, यह हादसा शुक्रवार सुबह फ्लोरिडा के बोका रैटन में हुआ।

सूत्रों के अनुसार, बोका फायर रेस्क्यू के सहायक अग्निशमन प्रमुख माइकल लासेल ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि विमान में स्पष्ट रूप से कुछ यांत्रिक समस्याएं थीं और यह मिलिट्री ट्रेल पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। आसमान से गिरने पर यह सबसे पहले कार से टकराया। इसके बाद उसमें आग लग गई। आग के कारण वह पेड़ से टकरा गया।

अमेरिका संघीय उड्डयन प्रशासन ने कहा कि सेसना 310 आर ने सुबह 10.15 बजे बोका रैटन हवाई अड्डे से उड़ान भरी थी। यह टल्हासी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे की ओर जा रहा था। नेशनल ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड के विमानन दुर्घटना जांचकर्ता कर्ट गिब्सन के अनुसार, दुर्घटनाग्रस्त होने से पहले यह लगभग आठ से 10 मिनट तक हवा में रहा। बोका रैटन के मेयर स्कॉट सिंगर ने कहा, 'हमारी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं पीड़ित परिवारों और सभी प्रभावितों के साथ हैं।' बताया गया है कि सड़क पर छोटा विमान जिस कार से टकराया, उसमें मौजूद एक व्यक्ति घायल हो गया। टक्कर के बाद कार रेलवे ट्रैक पर पहुंच गई। इस कारण रेलवे मार्ग को भी रोकना पड़ा। हादसे के बाद बोका रैटन एयरपोर्ट के पास कई सड़कें बंद कर दी गईं। इससे पहले गुरुवार को न्यूयॉर्क में एक टूरिस्ट हेलीकॉप्टर क्रैश हो गया था। हादसे में छह लोगों की मौत हो गई । मृतकों में तीन बच्चे भी शामिल हैं। इस हादसे में दिग्गज टेक कंपनी सीमेंस के सीईओ अगस्टिन एस्कोबार और उनका पूरा परिवार मारा गया।

खबरें संक्षेप में

पाकिस्तान में 5.5 तीव्रता का भूकंप, इस्लामाबाद से खैबर पख्तूनख्वा तक कांपी धरती

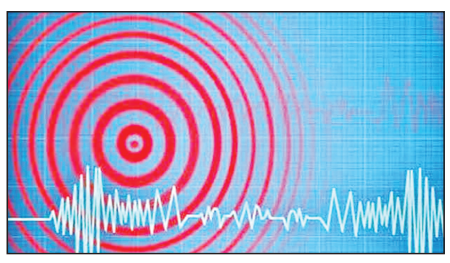

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के कई शहरों में आज दोपहर भूकंप के जोरदार झटके महसूस किए। राजधानी इस्लामाबाद से खैबर पख्तूनख्वा तक इसका प्रभाव दिखा। इससे नागरिकों में दहशत और चिंता फैल गई। लोग घरों से बाहर निकल आए। द न्यूज इंटरनेशनल के अनुसार, शुरुआती रिपोर्टों के अनुसार, समूचे अटक और चकवाल में भी भूकंप के झटके महसूस किए गए। खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के पेशावर, मर्दन, मोहमंद और शबकदर में भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। हालांकि, किसी भी प्रभावित क्षेत्र से अभी तक किसी के हताहत होने या नुकसान की रिपोर्ट नहीं मिली। पाकिस्तान के राष्ट्रीय भूकंपीय निगरानी केंद्र के अनुसार, भूकंप दोपहर 12.31 बजे आया। रिक्टर स्केल पर इसकी तीव्रता 5.5 दर्ज की गई। इसकी गहराई 12 किलोमीटर थी। भूकंप का केंद्र रावलपिंडी से 60 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में, अक्षांश 33.90 उत्तर और देशांतर 72.66 पूर्व पर स्थित था। इस्लामाबाद के एक व्यक्ति ने कहा कि सेक्टर एफ-11 में उसकी इमारत बायीं और दायीं ओर झुक गई। सेक्टर के लोग अपने घरों से बाहर निकल आए।

ढाका में बैशाख मंगल शोभायात्रा से पहले फूंका फासीवाद का मुखौटा

ढाका। यूनेस्को से अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्य 'बैशाख मंगल शोभायात्रा' निकलने से पहले फासीवाद का मुखौटा (प्रतीकात्मक चित्र) आगे के हवाले कर दिया गया। यह शोभायात्रा 14 अप्रैल को निकलनी थी। इससे ढाका विश्वविद्यालय में तनाव है। इसे ढाका विश्वविद्यालय के ललित कला संकाय (चारुकोला) ने बनाया था। ढाका ट्रिब्यून अखबार की खबर के अनुसार, ढाका यूनिवर्सिटी के प्रॉक्टर एसोसिएट प्रोफेसर सैफुद्दीन अहमद ने कहा कि यह घटना आज सुबह हुई। हालांकि, यह अभी भी स्पष्ट नहीं है कि आग कैसे लगी। प्रॉक्टर ने बताया कि फासीवाद के मुखौटे के साथ कबूतर की तस्वीर भी जलाई गई। उन्होंने कहा कि अभी तक यह पता नहीं चल पाया है कि आग किसने लगाई। सीसीटीवी फुटेज की जांच करने की कोशिश की जा रही है। ललित कला संकाय के डीन प्रोफेसर अजहरुल इस्लाम ने कहा कि यह पता लगाने के लिए कुछ समय चाहिए कि इसके लिए कौन जिम्मेदार है। घटना की जांच के लिए समिति का गठन किया जाएगा। सीसीटीवी फुटेज प्राप्त करने के प्रयास किए जा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि बैशाख मंगल शोभायात्रा को बांग्लादेश में मंगोल शोभायात्रा भी कहा जाता है। बांग्लादेश में बंगाली नव वर्ष (पहला बैशाख) के अवसर पर ढाका विश्वविद्यालय के ललित कला संकाय के शिक्षकों और छात्रों के तत्वावधान में पारंपरिक शोभायात्रा निकाली जाती है।

पाकिस्तान के पीएम शहबाज शरीफ चिकित्सा जांच कराने लंदन पहुंचे

लंदन। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ कल लंदन पहुंचे। बेलारूस की यात्रा पूरी कर लंदन पहुंचे शहबाज के दो दिन रुकने की योजना है। उनके बड़े भाई पीएमएल-एन अध्यक्ष और पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ शनिवार को दो सप्ताह के लिए ब्रिटेन की राजधानी पहुंचेंगे। प्रधानमंत्री शहबाज देर शाम ल्यूटन हवाई अड्डे पर उतरे। शहबाज का आज लंदन में स्वास्थ्य परीक्षण होना है। द न्यूज इंटरनेशनल के अनुसार, प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ रविवार रात इस्लामाबाद में प्रवासी पाकिस्तानी सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए स्वदेश वापस लौटेंगे। पीएमएल-एन के सूत्रों ने बताया कि प्रधानमंत्री आज चिकित्सा जांच के लिए जाएंगे और रविवार को उनकी दो बैठकें होंगी। वे कई वर्षों से लंदन में स्वास्थ्य जांच से गुजर रहे हैं। स्वदेश रवाना होने से पहले प्रधानमंत्री एवेन फील्ड फ्लैट्स में अपने बड़े भाई नवाज से मिलेंगे। प्रधानमंत्री शहबाज ने शुक्रवार को कहा कि बेलारूस ने पूर्वी यूरोपीय राष्ट्र में राष्ट्र निर्माण प्रयासों में योगदान देने के लिए 150,000 से अधिक युवा, अत्यधिक कुशल पाकिस्तानी श्रमिकों को आमंत्रित करने के लिए उदार प्रस्ताव दिया है।

ईरान-अमेरिका तनाव चरम पर

अमेरिकी सेना ने चारों तरफ से घेरा, परमाणु वार्ता से पहले युद्ध की आहट!

■ अगर कूटनीतिक कोशिशें नाकाम होती हैं, तो स्थिति सीधे सैन्य टकराव की ओर बढ़ेगी

तेहरान

मध्य पूर्व की जमीन एक बार फिर युद्ध के साये में है। अमेरिका और ईरान के बीच परमाणु वार्ता से पहले जो सैन्य गतिविधियां तेज़ हुई हैं, उनसे हालात असामान्य रूप से तनावपूर्ण हो गए हैं। अमेरिका की सैन्य तैनाती और सामरिक साजो-सामान यह संकेत दे रहे हैं कि अगर कूटनीतिक कोशिशें नाकाम होती हैं, तो स्थिति सीधे सैन्य टकराव की ओर बढ़ सकती है।

जानकारी अनुसार अमेरिका ने परमाणु वार्ता से पहले ही सैन्य तैनाती करते हुए ईरान को चारों ओर से घेरने जैसा काम किया है। अमेरिका ने अब तक दो एयरक्राफ्ट कैरियर्स कार्ल विंसन और ट्रूमैन की तैनाती कर दी है। यूएसएस कार्ल विंसन, 90 फाइटर जेट्स, 6000 सैनिकों के साथ तैनात हैं। यूएसएस हेरी एस ट्रुमन (एफ/ए-18, ई-2सी, एस-3, ब्लैक हॉक) मध्य पूर्व में सक्रिय रूप से तैनात कर दिए हैं।

इन दोनों स्ट्राइक ग्रुप्स के पास एफ-35सी स्टील्थ फाइटर, ईए-18जी इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर जेट, बंकर बस्टर और यहां तक कि परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम बी-2 बॉम्बर्स भी हैं।

इज़राइल ने 1000 सैनिकों को किया बर्खास्त

तेल अवीव। इज़राइली डिफेंस फोर्सेज (आईडीएफ) ने गाज़ा युद्ध की आलोचना करने वाले करीब 1000 रिजर्व सैनिकों को बर्खास्त कर दिया है। यह इज़राइली सेना में अब तक की सबसे बड़ी बर्खास्तगी मानी जा रही है, जो युद्ध के खिलाफ सार्वजनिक रूप से बोलने की वजह से हुई है। जानकारी अनुसार जिन सैनिकों को बड़ी संख्या में बर्खास्त किया गया दरअसल इन सैनिकों ने सरकार के नाम एक सार्वजनिक पत्र लिखा था। इस पत्र में कहा गया था कि गाज़ा में जारी जंग अब सैन्य नहीं, बल्कि राजनीतिक मकसदों की पूर्ति कर रही है। उन्होंने युद्धविराम की मांग करते हुए कहा कि, यह लड़ाई न तो बंधकों को छुड़ा पा रही है और न ही हमास को खत्म कर रही है। इसके चलते सैनिक, बंधक और आम नागरिक मारे जा रहे हैं। इस सार्वजनिक पत्र पर सैकड़ों रिटायर्ड अफसरों और वायुसेना के रिजर्व कर्मियों ने दस्तखत किए थे, जिसमें प्रसिद्ध रिजर्व नेविगेटर अलोन गुर का नाम भी शामिल है। इससे नाराज नेतन्याहू सरकार ने एक हजार रिजर्व सैनिकों को बर्खास्त कर दिया। आईडीएफ के प्रवक्ता ने कहा कि यह बयानबाज़ी सैन्य अनुशासन और एकता के खिलाफ है। हमारी प्राथमिकता देश की सुरक्षा है। जब हम कई मोर्चों पर जूझ रहे हैं, तब ऐसे सार्वजनिक बयानों से हमारी एकता और सैन्य नीति कमजोर होती है।

ईरान को चारों ओर से घेरा

डिएगो गार्सिया द्वीप से बी-2 बॉम्बर्स उड़ान भरने के लिए तैयार। साइप्रस, इजरायल, ओमान जैसे रणनीतिक लोकेशन्स पर सैन्य मौजूदगी मजबूत। थाड और प्रट्रियॉट डिफेंस सिस्टम्स पहले से सक्रिय। एफ-35 लड़ाकू विमानों की पहले से मौजूदगी, ऑपरेशन शुरू होने की संभावना जताती को काफी है। इस प्रकार से अमेरिका ने ईरान को चारों ओर से घेर रखा है।

शनिवार को ईरान-अमेरिका की ओमान में बैठक होनी है। ईरान के उप विदेश मंत्री अब्बास अराघची और अमेरिका के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ के बीच संभावित मुलाकात। बताया गया है कि बैठक की कोई तस्वीर/वीडियो जारी नहीं की जाएगी— जिससे ये संकेत मिलता है कि ये सीधी बातचीत हो सकती है, जबकि पहले ईरान ने इससे इनकार किया था। ऐसे में आशंका भी जाहिर की जा रही है कि यह बैठक कहीं दिखावा मात्र तो नहीं है, क्योंकि युद्ध का सारा साजो-सामान तो तैनात कर दिया गया है। ईरानी विदेश मंत्रालय का कहना है कि हम कूटनीति को एक मौका दे रहे हैं, लेकिन पहले से कोई निर्णय नहीं लेंगे। अमेरिका को इस रवैये की सराहना करनी चाहिए।

सिर्फ दबाव की रणनीति?

राजनीतिक विश्लेषकों की मानें तो अमेरिका की भारी सैन्य तैनाती डिप्लोमेसी थ्रू डॉमिनेंस की रणनीति हो सकती है— बातचीत से पहले दबाव बनाना। लेकिन इतनी बड़ी सैन्य तैनाती सिर्फ दिखावा नहीं होती। यह संकेत भी हो सकता है कि अमेरिका टू स्ट्राइक इफ नेसेसरी यानी जरूरत पड़ने पर हमला करने के लिए पूरी तरह तैयार है।

ईरान की तरफ से अब तक कोई आक्रामक प्रतिक्रिया नहीं आई है, लेकिन खामेनेई के सलाहकार शमखानी ने कहा कि यह वार्ता अप्रत्यक्ष है और व्यावहारिक प्रस्ताव मौजूद हैं। ईरान ने यह भी कहा है कि वे एक निष्पक्ष और वास्तविक समझौता चाहते हैं, लेकिन राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता नहीं करेंगे।

नेपाल के पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र शाह को तलब कर संसदीय समिति से हिदायत देने की सांसदों की मांग

■ ज्ञानेन्द्र शाह 28 मार्च की घटना में शामिल थे या नहीं, जांच हो

काठमांडू

नेपाल में राजशाही समर्थकों के प्रदर्शन के दौरान 28 मार्च को हुई हिंसक घटना पर चर्चा के लिए पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र शाह को संसदीय समिति के समक्ष बुलाने की मांग की गई है। संसद की विधि, न्याय एवं मानवाधिकार समिति की बैठक में नेपाली कांग्रेस और सीपीएन (यूएमएल) के कुछ सांसदों ने इसकी मांग की है। सांसदों ने कहा कि पूर्व राजा को चर्चा के साथ ही हिदायत देने के लिए संसदीय समिति के समक्ष बुलाना जरूरी है।

गृहमंत्री रमेश लेखक की उपस्थिति में शनिवार को हुई बैठक में सत्तारूढ़ दल के सांसदों ने इस बात पर जोर दिया कि 28 मार्च की हिंसक घटना की गहन जांच के लिए पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र शाह को भी तलब किया जाना चाहिए। नेपाली कांग्रेस के सांसद और संयुक्त महासचिव जीवन परियार ने कहा कि पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र शाह को हिंसा की घटना में उनकी संलिप्तता के बारे में पूछताछ के लिए बुलाया जाना चाहिए। नेपाली कांग्रेस की सांसद नगीना यादव ने कहा कि पूर्व राजा को बुलाकर 28 मार्च की घटना से उनके संबंध और इस प्रदर्शन के लिए उन्होंने निर्देश दिया या नहीं, यह पूछना जरूरी है। नगीना यादव ने कहा कि यह मानवाधिकारों का उल्लंघन है या नहीं, क्या एक नागरिक के तौर पर पूर्व राजा को ऐसा करने की अनुमति है?

सीपीएन (यूएमएल) की सांसद नैनकला थापा ने कहा कि संविधान की नजर में सभी नागरिकों को समान मानवाधिकार प्राप्त हैं। किसी को भी अराजकता और अमानवीय व्यवहार में लिप्त होने का अधिकार नहीं है। संविधान की नजर में सभी समान हैं। पूर्व राजा के मानवाधिकार सामान्य जनता के समान ही हैं, इससे अधिक कुछ नहीं, इसलिए उन्हें किसी भी बहाने से छूट नहीं देनी चाहिए। सीपीएन (यूएमएल) की मुख्य सचेतक महेश बरतौला ने 28 मार्च की हिंसक घटना में निष्पक्ष जांच की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ज्ञानेन्द्र शाह तिनकुने घटना में शामिल थे और उन्हें इसके लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। राजशाही के पक्ष में हुए प्रदर्शन में 2 लोगों की मौत हो गई थी। बैठक में राजा समर्थक राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी के सांसद ध्रुव बहादुर प्रधान ने आरोप लगाया कि 28 मार्च की तिनकुने की घटना को राज्य द्वारा जानबूझकर दबाया गया।

मसरूर एयरबेस पर आतंकी हमले की साजिश नाकाम

करांची। पाकिस्तान की सुरक्षा एजेंसियों ने एक बड़ी आतंकी साजिश को नाकाम कर देश को एक भयावह त्रासदी से बचा लिया है। कराची स्थित मसरूर एयरबेस—जहां परमाणु हथियारों के होने की आशंका जताई जाती है—को निशाना बनाने की आतंकी योजना को विफल कर दिया गया है। इस हमले की साजिश तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के आतंकियों द्वारा रची गई थी। इस घटना के बाद सवाल उठाए जा रहे हैं कि यदि आतंकी अपने मकसद में कामयाब हो जाते और उनके हाथ परमाणु हथियार लग जाते तब पाकिस्तान का हाल क्या होता? लोगों ने खुदा का शुक्र अदा किया है कि आतंकी अपनी योजना में सफल नहीं हो पाए, वर्ना कुछ भी हो सकता था।

नेपाल ने भूकंप प्रभावित म्यांमार को भेजी 27 टन राहत सामग्री, अब तक 3,590 मौतें

काठमांडू

नेपाल सरकार ने भूकंप प्रभावित म्यांमार को 27 टन राहत सामग्री भेजी है। नेपाल के अधिकारियों ने यांगून अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर म्यांमार के अधिकारियों को राहत सामग्री सौंपी। विदेश मंत्रालय में दक्षिण पूर्व एशिया के प्रमुख संयुक्त सचिव तपस अधिकारी ने यह जानकारी दी। राहत सामग्री में खाद्य पदार्थ, दैनिक उपयोगी वस्तुए और दवाएं शामिल हैं।

यांगून एयरपोर्ट पर नेपाली राजदूत हरीश चंद्र घिमिरे और म्यांमार के अधिकारी इस दौरान उपस्थित थे। आने वाले दिनों में नेपाल की तरफ से और किस तरह से सहयोग किया जा सकता है इसको लेकर दोनों देशों के अधिकारियों के बीच संक्षिप्त चर्चा भी हुई। इस दौरान नेपाल के एक अधिकारी ने याद दिलाया कि म्यांमार सरकार ने 2015 के भूकंप के दौरान नेपाल की भी सहायता की थी।

म्यांमार के एक अधिकारी हेउ वाई लविन ने बताया कि भूकंप में अब तक 3,590 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 4,800 घायल हो गए हैं और 148 लापता हैं। नेपाली राजदूत घिमिरे ने बताया कि म्यांमार में लगभग 150,000 नेपाली काम कर रहे हैं और उनमें से 18 भूकंप में मारे गए थे। इस आपदा में करीब 15 नेपाली अभी भी लापता हैं। 28 मार्च को 7.7 तीव्रता का भूकंप आया था।

व्हाइट हाउस की सजावट बदली, ओबामा की जगह पर ट्रंप की फोटो लगाई

वाशिंगटन

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति के आधिकारिक आवास व्हाइट हाउस की सजावट (डेकोरेशन) में अप्रत्याशित बदलाव किया गया है। इसके तहत पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा की आधिकारिक तस्वीर को हटा दिया गया है। इस स्थान पर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की पिछले साल वायरल हुई फोटो को लगाया गया है।

व्हाइट हाउस ने अपने आधिकारिक अकाउंट में इस बदलाव को साझा किया है। उल्लेखनीय है कि पिछले साल जुलाई में पेंसिल्वेनिया के बटलर काउंटी के मैदान में एक रैली के दौरान डोनाल्ड ट्रंप पर गोलीबारी की गई थी। इस हमले में ट्रंप के कान को छूते हुए गोली निकल गई थी। इसके बाद ट्रंप की एक फोटो दुनियाभर में वायरल हुई थी। इसमें ट्रंप मुट्ठी बांधकर

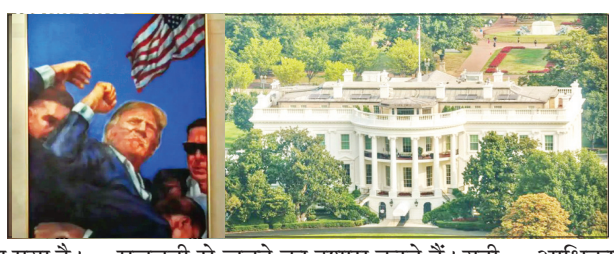

मजबूती से लड़ने का इशारा करते हैं। यही फोटो व्हाइट हाउस में लगाई गई है।

ओबामा का फोटो 2022 में व्हाइट हाउस के स्टेट फ्लोर के फोयर में सीढ़ियों के पास लगाया गया था। अब उसे सामने की दूसरी दीवार में शिफ्ट किया गया है। यहां पूर्व राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश का फोटो लगा था। बुश के फोटो को शिफ्ट कर उनके पिता जॉर्ज एच डब्ल्यू बुश की तस्वीर के पास लगाया जाएगा। उल्लेखनीय है कि 2022 में तत्कालीन राष्ट्रपति जो बाइडेन और उनकी पत्नी जिल बाइडेन ने ओबामा की तस्वीर के अनावरण के लिए व्हाइट हाउस में पूर्व राष्ट्रपति ओबामा और उनकी पत्नी मिशेल की मेजबानी की थी। इससे पहले डेमोक्रेट बिल क्लिंटन ने रिपब्लिकन जॉर्ज एच डब्ल्यू बुश और राष्ट्रपति बुश ने क्लिंटन की मेजबानी की थी।

ओबामा ने 2012 में बुश के आधिकारिक चित्र के अनावरण के लिए व्हाइट हाउस में जॉर्ज डब्ल्यू बुश और उनकी पत्नी लॉरा का स्वागत किया था। मगर ट्रंप ने अपने पहले कार्यकाल के दौरान ओबामा की मेजबानी नहीं की थी। व्हाइट हाउस की परंपरा के मुताबिक हाल ही के दो राष्ट्रपतियों के फोटो फोयर में लगे होते हैं। डोनाल्ड ट्रंप की नई तस्वीर व्हाइट हाउस ने अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर साझा की। खास बात यह है कि डोनाल्ड ट्रंप की फोटो को बिना किसी पूर्व सूचना के लगाया गया है। ट्रंप वर्तमान और पूर्व राष्ट्रपति दोनों हैं।

सुप्रीम कोर्ट कहेगा तो अब्रेगो गार्सिया को अल साल्वाडोर की जेल से अमेरिका लाया जाएगा: ट्रंप

वाशिंगटन। संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एयर फोर्स वन पर पत्रकारों से बातचीत में अपने फैसले पर बड़ी बात कही। उन्होंने कहा कि अगर सुप्रीम कोर्ट कहेगा तो वह किल्मर अब्रेगो गार्सिया को अमेरिका वापस लाएंगे। उनके मन में सुप्रीम कोर्ट के लिए बहुत सम्मान है। ट्रंप का यह बयान सुप्रीम कोर्ट की कल की टिप्पणी के बाद आया है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि ट्रंप प्रशासन को अब्रेगो गार्सिया को वापस लाने में सुविधा प्रदान करनी चाहिए, क्योंकि प्रशासन ने स्वीकार किया है कि उसने गलती से गार्सिया को अल साल्वाडोर की जेल में निर्वासित कर दिया था। सूत्रों के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट ने ट्रंप प्रशासन से कहा था कि वह इस संबंध में अपने आगामी कदमों की जानकारी दे। ट्रंप ने आज रात एयर फोर्स वन में कहा कि वह निचली अदालत के आदेशों का पालन करने के लिए बाध्य नहीं होंगे। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा, 'मैं निचली अदालत की बात नहीं कर रहा हूं, मैं सुप्रीम कोर्ट का बहुत सम्मान करता हूं। अगर सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि उसे वापस लाया जाए, तो मैं शीर्ष अदालत के फैसले को स्वीकार करूंगा।' उल्लेखनीय है कि एब्रेगो गार्सिया को पिछले महीने अल साल्वाडोर की एक कुख्यात मेगाजेल में उन लोगों के साथ भेजा गया था, जिनके बारे में प्रशासन का दावा है कि वे वेनेजुएला के गिरोह के सदस्य हैं। उनके वकीलों ने कहा है कि मूल रूप से अल साल्वाडोर के रहने वाले एब्रेगो गार्सिया अमेरिका में वैधानिक रूप रह रहे थे और गिरोह की हिंसा से बचने के लिए उन्होंने अपना देश छोड़ दिया था।